हिंदी का नामकरण

'हिंदी' मूलतः फारसी शब्द है। 'हिंदी' शब्द का संबंध संस्कृत शब्द 'सिंधु' से माना जाता है। 'सिंधु' सिंध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आसपास की भूमि को 'सिंधु' कहने लगे। यह 'सिंधु' शब्द ईरानी में जाकर 'हिंदु' और फिर 'हिंद' हो गया (फारसी में 'स' 'ह' में परिवर्तित हो जाता है) और इसका अर्थ हुआ 'सिंध प्रदेश'। बाद में ईरानी धीरे–धीरे भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा 'हिंद' शब्द धीरे–धीरे पूरे भारत का वाचक हो गया। इसी में ईरानी का 'ईक' प्रत्यय लगने से 'हिंदीक' बना। यूनानी शब्द 'इंदिका' या अंग्रेजी शब्द 'इंडिया' आदि इस 'हिंदीक' के ही विकसित रूप हैं। कालांतर में 'हिंदीक' के अंतिम व्यंजन के लोप होने से हिंदी शब्द बना जिसका मूल अर्थ है 'हिंद का'। लोगों को यह जानकर बड़ा आश्चर्य होगा कि जिस भारतीय भाषा को 'हिंदी' की संज्ञा प्रदान की गई है, वह उस भाषा का शब्द ही नहीं है।

हिंदी शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से तीन अर्थो में हुआ –

(क) व्यापक अर्थ– हिंदी शब्द का प्रयोग भारत से संबद्ध किसी भी व्यक्ति, वस्तु तथा भारत में बोली जाने वाली भाषाओं के लिए किया जाता था। हिंदी हिंदी–प्रदेश में बोली जाने वाली 18 बोलियों का द्योतक मानी जाती है, इसीलिए उसके अंतर्गत ब्रज, अवधी, डिंगल, मैथिली, खड़ी बोली आदि में लिखित साहित्य का विवेचन किया जाता है।

(ख) प्रचलित अर्थ– प्रसिद्ध भाषा शास्त्री डॉ. सर जार्ज ग्रियर्सन के अनुसार इन आठ बोलियों के अर्थ में हिंदी का प्रयोग हुआ है–

(1) पश्चिमी हिंदी– खड़ी बोली, ब्रज, बॉगरू (हरियाणी), कन्नौजी, बुंदेली

(2) पूर्वी हिंदी– अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी

हिंदी के कुछ विद्वान राजस्थान की मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मालवी तथा मध्य पहाड़ी एवं बिहारी की मैथिली, मगही तथा भोजपुरी बोलियों को भी हिंदी के अंतर्गत मानते हैं।

(ग) संकुचित अर्थ– हिंदी शब्द का संकुचित अर्थ है–खड़ी बोली साहित्यिक हिंदी, जो आज हिंदी–प्रदेशों की सरकारी भाषा है, पूरे भारत की राजभाषा है, समाचारपत्रों और फ़िल्मों में जिसका प्रयोग होता है, जो हिंदी प्रदेश में शिक्षा का माध्यम है और जिसे परिनिष्ठित हिंदी, मानक हिंदी आदि नामों से भी जानते हैं।

हिंदी भाषा की उत्पत्ति

हिंदी भाषा का जन्म उत्तर भारत में हुआ पर उसका नामकरण ईरानियों और भारत के मुसलमानों ने किया। यह बात कुछ ऐसी ही है कि बच्चा हमारे घर जनमे और उसका नामकरण हमारे पड़ोसी करें।

भाषा नदी की धारा के समान चंचल होती है। यह रुकना नहीं जानती, यदि कोई भाषा को बलपूर्वक रोकना भी चाहे तो यह उसके बंधन को तोड़ आगे निकल जाती है। यही भाषा की स्वाभाविक प्रकृति और प्रवृत्ति है। संस्कृत भारत की सबसे प्राचीन भाषा है जिसे आर्य भाषा या देव भाषा भी कहा जाता है। हिंदी इसी आर्य भाषा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी मानी जाती है। हिंदी का जन्म संस्कृत की ही कोख से हुआ है। हिंदी का विकास क्रम इस प्रकार है–

संस्कृत >> पालि >> प्राकृत >> अपभ्रंश >> हिंदी

1. संस्कृत – संस्कृत हमें दो रूप में मिलती है–

(क) वैदिक संस्कृत (1500ई.पू. से 1000ई.पू.) – मूल रूप से वेदों की रचना जिस भाषा में हुई उसे वैदिक संस्कृत कहा जाता है। संस्कृत का प्राचीनतम रूप संसार की प्रथम कृति ऋग्वेद में प्राप्त होता है।

(ख) लौकिक संस्कृत (1000ई.पू. से 500ई.पू.) – इसे उत्तर संस्कृत भी कहते हैं। ये पढ़े लिखे लोगों तथा विद्वानों एवं उच्चजाति की भाषा थी। इस भाषा का प्रयोग साहित्य लेखन में भरपूर हुआ। इसी भाषा में रामायण, महाभारत, पुराण, उपनिषद, नाटक, व्याकरण आदि ग्रंथ लिखे गए। वाल्मीकि, व्यास, अश्वघोष, भाष, कालिदास, माघ आदि की रचलाएँ इसी भाषा में हैं।

2. पालि (500ई.पू. से 1ई.) – संस्कृत कालीन बोलचाल की भाषा विकसित होते–होते या ये कहें कि सरल होते–होते काफी बदल गई जिसे पालि नाम दिया गया। इसे भारत की प्रथम देशी भाषा या जन भाषा कहा जाता है। बौद्ध ग्रंथ इसी भाषा में लिखे गए। प्रसिद्ध बौद्ध ग्रंथ 'त्रिपिटक' पालि भाषा में ही है।

3. प्राकृत (1ई. से 500ई.) – पहली ई. तक आते–आते पालि की बोलचाल की भाषा और परिवर्तित हुई तथा इसको प्राकृत की संज्ञा दी गई। सामान्य मतानुसार जो भाषा असंस्कृत थी और बोलचाल की आम भाषा थी तथा सहज ही बोली समझी जाती थी, स्वभावतः प्राकृत कहलायी। इस भाषा में जैन ग्रंथ लिखे गए।

4. अपभ्रंश (500ई. से 1000ई.) – कुछ दिनों बाद प्राकृत में भी परिवर्तन हो गया और लिखित प्राकृत का विकास मंद पड़ गया। प्राकृत के स्वाभाविक बदलाव के बाद अपभ्रंश का जन्म हुआ जिसका अर्थ बिगड़ी हुई भाषा था। प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी डॉ भोलानाथ तिवारी ने अपभ्रंश के निम्नलिखित सात भेद स्वीकार किए हैं–
शौरसेनी, पैशाची, ब्राचड़, खस, महाराष्ट्री, मागधी और अर्ध मागधी

5. हिंदी (1000ई से आजतक) – 1000ई. तक आते–आते अपभ्रंश का काल समाप्त हो गया और हिंदी का युग आरंभ हुआ। हिंदी का जन्म निम्मलिखित अपभ्रंशों से हुआ–
शौरसेनी, मागधी और अर्द्ध मागधी

इस प्रकार इन अपभ्रंशों से निकली हुई 18 बोलियों (बॉगरू, बुंदेली, ब्रजभाषा, खड़ी बोली, कन्नौजी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, जयपुरी, मेवाती, मारवाड़ी, मालवी, कुमाउॅनी, नेपाली, गढ़वाली, मैथिली, मगही, भोजपुरी) का प्रतिनिधित्व करती हुई हिंदी लगभग 1020 वर्ष से हमें लगातार कृतार्थ करती चली आ रहीं है।